قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

لَنْ تَنَالُوا

पारा - 4

eParah

لَنْ	تَنَالُوا	الْبِرَّ	حَتّٰى	تُنْفِقُوْا	مِمَّا	تُحِبُّوْنَ ۵	وَمَا
हरगिज़ नहीं	तुम पा सकते	नेकी को	यहां तक कि	तुम ख़र्च करो	उसमें से जो	तुम पसंद करते हो	और जो

تُنْفِقُوْا	مِنْ شَيْءٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	بِهٖ	عَلِيْمٌ (92)	كُلُّ	الطَّعَامِ
तुम ख़र्च करोगे	कोई चीज़	तो बेशक	अल्लाह	उसे	ख़ूब जानने वाला है	हर	खाना

كَانَ	حِلًّا	لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	اِلَّا	مَا	حَرَّمَ	اِسْرَآءِيْلُ
था	हलाल	बनी इस्राईल के लिए	मगर	जो	हराम किया	इस्राईल ने

عَلٰى نَفْسِهٖ	مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تُنَزَّلَ	التَّوْرٰىةُ ط	قُلْ	فَاْتُوْا
अपने नफ़्स पर	इससे पहले	कि	नाज़िल की जाती	तौरात	कह दीजिए	पस ले आओ

بِالتَّوْرٰىةِ	فَاتْلُوْهَآ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (93)	فَمَنِ	افْتَرٰى
तौरात को	फिर पढ़ो उसे	अगर	हो तुम	सच्चे	तो जो कोई	गढ़ ले

عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ (94) ؎
अल्लाह पर	झूठ	बाद	इसके	तो यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं

قُلْ	صَدَقَ	اللّٰهُ قف	فَاتَّبِعُوْا	مِلَّةَ	اِبْرٰهِيْمَ	حَنِيْفًا ط	وَمَا	كَانَ
कह दीजिए	सच फ़रमाया	अल्लाह ने	तो पैरवी करो	मिल्लते	इब्राहीम की	जो यकसू था	और ना	था वो

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (95)	اِنَّ	اَوَّلَ	بَيْتٍ	وُّضِعَ	لِلنَّاسِ	لَلَّذِيْ
मुशरिकीन में से	बेशक	पहला	घर	जो बनाया गया	लोगों के लिए	यक़ीनन वही है जो

بِبَكَّةَ	مُبٰرَكًا	وَّهُدًى	لِّلْعٰلَمِيْنَ (96) ج	فِيْهِ	اٰيٰتٌۢ	بَيِّنٰتٌ
मक्का में है	मुबारक/बाबरकत	और हिदायत है	तमाम जहानों के लिए	उसमें	निशानियां हैं	वाज़ेह

مَّقَامُ	اِبْرٰهِيْمَ ج ۵	وَمَنْ	دَخَلَهٗ	كَانَ	اٰمِنًا ط	وَلِلّٰهِ	عَلَى
मक़ामे	इब्राहीम है	और जो कोई	दाख़िल हुआ इसमें	वो हो गया	अमन वाला	और अल्लाह ही के लिए है	ऊपर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَفَرَ	وَمَنْ	سَبِيْلًا ط	اِلَيْهِ	اسْتَطَاعَ	مَنِ	الْبَيْتِ	حِجُّ	النَّاسِ
कुफ़्र करे	और जो कोई	रास्ते की	तरफ़ उसके	इस्तिताअत रखता हो	जो कोई	बैतुल्लाह का	हज करना	लोगों के

لِمَ	يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ	قُلْ	عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿97﴾	غَنِيٌّ	اللّٰهَ	فَاِنَّ
क्यों	ऐ अहले किताब	कह दीजिए	तमाम जहानों से	बहुत बेनियाज़ है	अल्लाह	तो बेशक

تَعْمَلُوْنَ ﴿98﴾	مَا	عَلٰى	شَهِيْدٌ	وَاللّٰهُ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ق صلے	تَكْفُرُوْنَ
तुम अमल करते हो	जो	उस पर	ख़ूब गवाह है	और अल्लाह	अल्लाह की आयात का	तुम कुफ़्र करते हो

مَنْ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	تَصُدُّوْنَ	لِمَ	يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ	قُلْ
उसे जो	अल्लाह के रास्ते से	तुम रोकते/फिरते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दीजिए

اللّٰهُ	وَمَا	شُهَدَآءُ ط	وَّاَنْتُمْ	عِوَجًا	تَبْغُوْنَهَا	اٰمَنَ
अल्लाह	और नहीं है	गवाह हो	हालांकि तुम	टेढ़ापन/कजी	तुम तलाश करते हो उसमें	ईमान लाया

تُطِيْعُوْا	اِنْ	اٰمَنُوْۤا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	تَعْمَلُوْنَ ﴿99﴾	عَمَّا	بِغَافِلٍ
तुम इताअत करोगे	अगर	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	तुम अमल करते हो	उस से जो	गाफ़िल

اِيْمَانِكُمْ	بَعْدَ	يَرُدُّوْكُمْ	الْكِتٰبَ	اُوْتُوا	مِّنَ الَّذِيْنَ	فَرِيْقًا
तुम्हारे ईमान के	बाद	वो फेर देंगे तुम्हें	किताब	दिए गए	उनमें से जो	एक गिरोह की

عَلَيْكُمْ	تُتْلٰى	وَاَنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ	وَكَيْفَ	كٰفِرِيْنَ ﴿100﴾
तुम पर	पढ़ी जाती हैं	हालांकि तुम	तुम कुफ़्र करते हो	और कैसे	काफ़िर(बना कर)

فَقَدْ	بِاللّٰهِ	يَّعْتَصِمْ	وَمَنْ	رَسُوْلُهٗ ط	وَفِيْكُمْ	اللّٰهِ	اٰيٰتُ
तो तहक़ीक़	अल्लाह को	थाम ले	और जो	उसका रसूल	और तुम में है	अल्लाह की	आयात

اتَّقُوا	اٰمَنُوا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿101﴾ ع	اِلٰى صِرَاطٍ	هُدِيَ
डरो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	सीधे के	तरफ़ रास्ते	वह हिदायत दे दिया गया

ع 10 10 1

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهَ	حَقَّ	تُقٰتِهٖ	وَلَا تَمُوْتُنَّ	اِلَّا	وَ اَنْتُمْ	مُّسْلِمُوْنَ (102)
अल्लाह से	जैसे हक़ है	उस से डरने का	और हरगिज़ ना तुम मरना	मगर	इस हाल में कि तुम	मुसलमान हो

وَاعْتَصِمُوْا	بِحَبْلِ اللّٰهِ	جَمِيْعًا	وَّلَا	تَفَرَّقُوْا ص	وَاذْكُرُوْا	نِعْمَتَ
और मज़बूती से पकड़ लो	अल्लाह की रस्सी को	सबके सब	और ना	तुम फ़िरक़ा-फ़िरक़ा बनो	और याद करो	नेअमत को

اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	كُنْتُمْ	اَعْدَآءً	فَاَلَّفَ	بَيْنَ	قُلُوْبِكُمْ
अल्लाह की	अपने ऊपर	जब	थे तुम	दुश्मन	तो उसने उल्फ़त डाल दी	दर्मियान	तुम्हारे दिलों के

فَاَصْبَحْتُمْ	بِنِعْمَتِهٖٓ	اِخْوَانًا ج	وَ كُنْتُمْ	عَلٰى شَفَا	حُفْرَةٍ
तो हो गए तुम	उसकी नेअमत से	भाई-भाई	और थे तुम	किनारे पर	गढ़े के

مِّنَ النَّارِ	فَاَنْقَذَكُمْ	مِّنْهَا ط	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمْ
आग के	तो उसने बचा लिया तुम्हें	उस से	इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए

اٰيٰتِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ (103)	وَلْتَكُنْ	مِّنْكُمْ	اُمَّةٌ	يَّدْعُوْنَ
आयात अपनी	ताकि तुम	तुम हिदायत पाओ	और ज़रूर हो	तुम में से	एक गिरोह(के लोग)	जो दावत दें

اِلَى الْخَيْرِ	وَيَاْمُرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ ط
तरफ़ ख़ैर के	और हुक्म दें	नेकी का	और जो रोकें	बुराई से

وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ (104)	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ	تَفَرَّقُوْا
और यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	और ना	तुम हो जाना	उनकी तरह जो	फ़िरक़ा-फ़िरक़ा बन गए

وَاخْتَلَفُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَهُمُ	الْبَيِّنٰتُ ط	وَاُولٰٓئِكَ	لَهُمْ
और उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	बाद इसके	जो	आ गईं उनके पास	वाज़ेह निशानियां	और यही लोग हैं	उनके लिए

عَذَابٌ	عَظِيْمٌ (105) لا	يَّوْمَ	تَبْيَضُّ	وُجُوْهٌ	وَّتَسْوَدُّ	وُجُوْهٌ ج
अज़ाब है	बहुत बड़ा	जिस दिन	रोशन होंगे	कुछ चेहरे	और स्याह होंगे	कुछ चेहरे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اسْوَدَّتْ	وُجُوْهُهُمْ ق	اَكَفَرْتُمْ	بَعْدَ	اِيْمَانِكُمْ
तो रहे	वो लोग जो	स्याह होंगे	चेहरे जिनके	क्या कुफ़्र किया तुमने	बाद	अपने ईमान के

فَذُوْقُوا	الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ ﴿106﴾	وَ اَمَّا	الَّذِيْنَ
पस चखो	अज़ाब को	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	और रहे	वो जो

ابْيَضَّتْ	وُجُوْهُهُمْ	فَفِيْ رَحْمَةِ	اللّٰهِ ط	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿107﴾
सफ़ेद होंगे	चेहरे जिनके	तो रहमत में होंगे	अल्लाह की	वो	उस में	हमेशा रहने वाले हैं

تِلْكَ	اٰيٰتُ	اللّٰهِ	نَتْلُوْهَا	عَلَيْكَ	بِالْحَقِّ ط	وَمَا	اللّٰهُ
ये	आयात हैं	अल्लाह की	हम पढ़ रहे हैं उन्हें	आप पर	साथ हक़ के	और नहीं	अल्लाह

يُرِيْدُ	ظُلْمًا	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿108﴾	وَ لِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا
इरादा रखता	किसी ज़ुल्म का	जहान वालों के लिए	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ

ع 11 8 2

فِي الْاَرْضِ ط	وَ اِلَى اللّٰهِ	تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ ﴿109﴾ ع	كُنْتُمْ	خَيْرَ	اُمَّةٍ
ज़मीन में है	और तरफ़ अल्लाह ही के	लौटाए जाते हैं	सब काम	हो तुम	बेहतरीन	उम्मत

اُخْرِجَتْ	لِلنَّاسِ	تَاْمُرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَ تَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
निकाली गई हो	लोगों के लिए	तुम हुक्म देते हो	मारूफ़/अच्छाई का	और तुम रोकते हो	मुंकर/बुराई से

وَ تُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ ط	وَ لَوْ	اٰمَنَ	اَهْلُ الْكِتٰبِ	لَكَانَ	خَيْرًا
और तुम ईमान लाते हो	अल्लाह पर	और अगर	ईमान लाते	अहले किताब	अलबत्ता होता	बेहतर

لَّهُمْ ط	مِنْهُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	وَ اَكْثَرُهُمُ	الْفٰسِقُوْنَ ﴿110﴾	لَنْ
उनके लिए	बाज़ उनके	मोमिन हैं	और अक्सर उनके	फ़ासिक़ हैं	हरगिज़ नहीं

يَّضُرُّوْكُمْ	اِلَّآ	اَذًى ط	وَ اِنْ	يُّقَاتِلُوْكُمْ	يُوَلُّوْكُمُ
वह नुक़्सान देंगे तुम्हें	सिवाए	अज़ियत के	और अगर	वह जंग करेंगे तुमसे	वह फेर दें तुमसे

الْاَدْبَارَ قف	ثُمَّ	لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿111﴾	ضُرِبَتْ	عَلَيْهِمُ	الذِّلَّةُ	اَيْنَ مَا
पुश्तें	फिर	ना वह मदद किए जाऐंगे	मार दी गई	उन पर	ज़िल्लत	जहां कहीं

ثُقِفُوْٓا	اِلَّا	بِحَبْلٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَحَبْلٍ	مِّنَ النَّاسِ	وَبَآءُوْ
वो पाए गए	मगर	साथ रस्सी (ताल्लुक़)के	अल्लाह की	और रस्सी (ताल्लुक़) के	लोगों की	और वो लौटे

بِغَضَبٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَضُرِبَتْ	عَلَيْهِمُ	الْمَسْكَنَةُ ط	ذٰلِكَ
साथ ग़ज़ब के	अल्लाह की तरफ़ से	और मार दी गई	उन पर	मोहताजी	ये

بِاَنَّهُمْ	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	وَيَقْتُلُوْنَ	الْاَنْۢبِيَآءَ
बवजह इसके कि वो	थे वो	वो कुफ़्र करते	अल्लाह की आयात का	और वह क़त्ल करते	नबियों को

بِغَيْرِ	حَقٍّ ط	ذٰلِكَ	بِمَا	عَصَوْا	وَّكَانُوْا	يَعْتَدُوْنَ ﴿112﴾ ق
बग़ैर	हक़ के	यह	बवजह उसके जो	उन्होंने नाफ़रमानी की	और थे वो	वो हद से बढ़ जाते

لَيْسُوْا	سَوَآءً ط	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	اُمَّةٌ	قَآئِمَةٌ	يَّتْلُوْنَ
नहीं हैं वो सब	यकसां/बराबर	अहले किताब में से	एक जमाअत है	जो क़ायम है (हक़ पर)	वो तिलावत करते हैं

اٰيٰتِ اللّٰهِ	اٰنَآءَ	الَّيْلِ	وَهُمْ	يَسْجُدُوْنَ ﴿113﴾	يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
अल्लाह की आयात की	घड़ियों में	रात की	और वो	सज्दा करते हैं	वो ईमान रखते हैं	अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَيَاْمُرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
और आख़िरी दिन पर	और वो हुक्म देते हैं	नेकी का	और वो रोकते हैं	बुराई से

وَيُسَارِعُوْنَ	فِي الْخَيْرٰتِ ط	وَاُولٰٓئِكَ	مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿114﴾	وَمَا
और वो एक दूसरे से जल्दी करते हैं	नेकियों में	और यही लोग हैं	सालेहीन में से	और जो भी

يَفْعَلُوْا	مِنْ خَيْرٍ	فَلَنْ	يُّكْفَرُوْهُ ط	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ
वो करेंगे	भलाई में से	तो हरगिज़ नहीं	वो नाक़द्री किए जाऐंगे उसकी	और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿115﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَنْ	تُغْنِيَ	عَنْهُمْ
मुत्तक़ी लोगों को	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	हरगिज़ नहीं	काम आऐंगे	उन्हें

اَمْوَالُهُمْ	وَلَآ	اَوْلَادُهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا ؕ	وَاُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ
माल उनके	और ना	औलाद उनकी	अल्लाह से	कुछ भी	और यही लोग हैं	साथी

النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿116﴾	مَثَلُ	مَا	يُنْفِقُوْنَ
आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	मिसाल	उसकी जो	वो ख़र्च करते हैं

فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	كَمَثَلِ	رِيْحٍ	فِيْهَا	صِرٌّ	اَصَابَتْ
इस ज़िंदगी में	दुनिया की	मानिंद मिसाल	हवा के है	जिसमें	सख़्त सर्दी हो	वो पहुंचे

حَرْثَ	قَوْمٍ	ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	فَاَهْلَكَتْهُ ؕ	وَمَا	ظَلَمَهُمُ
खेती को	एक क़ौम की	जिन्होंने ज़ुल्म किया	अपने नफ़्सों पर	तो उसने हलाक कर दिया उसे	और नहीं	ज़ुल्म किया उन पर

اللّٰهُ	وَلٰكِنْ	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿117﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अल्लाह ने	और लेकिन	अपने ही नफ़्सों पर	वो ज़ुल्म करते थे	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

لَا تَتَّخِذُوْا	بِطَانَةً	مِّنْ دُوْنِكُمْ	لَا يَاْلُوْنَكُمْ	خَبَالًا ؕ	
ना तुम बनाओ	दिली दोस्त/राज़दान	अपने इलावा को	ना वो कमी करेंगे तुम से	किसी ख़राबी की	

وَدُّوْا	مَا عَنِتُّمْ ۚ	قَدْ	بَدَتِ	الْبَغْضَآءُ	مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ
वो दिल से चाहते हैं	कि मुश्किल में पड़ो तुम	तहक़ीक़	ज़ाहिर हो गया	बुग़्ज़	उनके मुंहों से

وَمَا	تُخْفِيْ	صُدُوْرُهُمْ	اَكْبَرُ ؕ	قَدْ	بَيَّنَّا	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ
और जो	छुपाते हैं	सीने उनके	ज़्यादा बड़ा है	तहक़ीक़	वाज़ेह कर दीं हमने	तुम्हारे लिए	निशानियां

اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْقِلُوْنَ ﴿118﴾	هَاَنْتُمْ	اُولَآءِ	تُحِبُّوْنَهُمْ	وَلَا
अगर	हो तुम	अक़्ल रखते	ख़बरदार तुम	वो लोग हो	तुम मोहब्बत रखते हो उनसे	और नहीं

يُحِبُّوْنَكُمْ	وَتُؤْمِنُوْنَ	بِالْكِتٰبِ	كُلِّهٖ ۚ	وَاِذَا	لَقُوْكُمْ
वो मोहब्बत रखते तुमसे	और तुम ईमान रखते हो	किताब पर	सारी की सारी	और जब	वो मुलाक़ात करते हैं तुमसे

قَالُوْٓا	اٰمَنَّا ۖۚ	وَاِذَا	خَلَوْا	عَضُّوْا	عَلَيْكُمُ	الْاَنَامِلَ
कहते हैं	ईमान लाए हम	और जब	वो तन्हा होते हैं	वो काटते हैं	तुम पर	उंगलियां

مِنَ الْغَيْظِ ؕ	قُلْ	مُوْتُوْا	بِغَيْظِكُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ
ग़ुस्से से	कह दीजिए	मर जाओ	साथ अपने ग़ुस्से के	बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿119﴾	اِنْ	تَمْسَسْكُمْ	حَسَنَةٌ	تَسُؤْهُمْ ۫	وَاِنْ
सीनों वाले (भेद)	अगर	पहुंचे तुम्हें	कोई भलाई	वो बुरी लगती है उन्हें	और अगर

تُصِبْكُمْ	سَيِّئَةٌ	يَّفْرَحُوْا	بِهَا ؕ	وَاِنْ	تَصْبِرُوْا	وَتَتَّقُوْا
पहुंचती है तुम्हें	कोई बुराई	वो ख़ुश होते हैं	उस पर	और अगर	तुम सब्र करो	और तुम तक़वा करो

لَا يَضُرُّكُمْ	كَيْدُهُمْ	شَيْـًٔا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ
ना नुक़्सान देगी तुम्हें	चाल उनकी	कुछ भी	बेशक	अल्लाह	उसको जो	वो अमल करते हैं

ع 12 11 3

مُحِيْطٌ ﴿120﴾ ع	وَاِذْ	غَدَوْتَ	مِنْ اَهْلِكَ	تُبَوِّئُ	الْمُؤْمِنِيْنَ
घेरने वाला है	और जब	सुबह सवेरे निकले आप	अपने घर वालों से	आप मुतय्यन(तैनात) कर रहे थे	मोमिनों को

مَقَاعِدَ	لِلْقِتَالِ ؕ	وَاللّٰهُ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ﴿121﴾ ۙ	اِذْ	هَمَّتْ
ठिकानों/मोर्चों पर	जंग के लिए	और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	जब	इरादा किया

طَّآئِفَتٰنِ	مِنْكُمْ	اَنْ	تَفْشَلَا ۙ	وَاللّٰهُ	وَلِيُّهُمَا ؕ	وَعَلَى اللّٰهِ
दो गिरोहों ने	तुम में से	कि	वो दोनों बुज़दिली दिखाऐं	और अल्लाह	मददगार था उन दोनों का	और अल्लाह ही पर

فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿122﴾	وَلَقَدْ	نَصَرَكُمُ	اللّٰهُ	بِبَدْرٍ	وَّاَنْتُمْ
पस चाहिए के तवक्कुल करें	ईमान वाले	और अलबत्ता तहक़ीक़	मदद की तुम्हारी	अल्लाह ने	बदर में	हालांकि तुम

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَذِلَّةٌ ۚ	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُونَ (123)	إِذْ	تَقُولُ
कमज़ोर थे	पस डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	जब	आप कह रहे थे

لِلْمُؤْمِنِينَ	أَلَنْ	يَكْفِيَكُمْ	أَنْ	يُمِدَّكُمْ	رَبُّكُمْ	بِثَلٰثَةِ	اٰلٰفٍ
मोमिनों को	क्या नहीं	काफ़ी होगा तुम्हें	कि	मदद करे तुम्हारी	रब तुम्हारा	साथ तीन	हज़ार

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	مُنْزَلِينَ ؕ (124)	بَلٰٓى ۙ	إِنْ	تَصْبِرُوا	وَتَتَّقُوا
फ़रिश्तों के	उतारे हुए	क्यों नहीं/बल्कि	अगर	तुम सब्र करोगे	और तुम तक़्वा करोगे

وَيَأْتُوكُمْ	مِّنْ فَوْرِهِمْ	هٰذَا	يُمْدِدْكُمْ	رَبُّكُمْ	بِخَمْسَةِ
और वो आएं तुम्हारे पास	अपने जोश से	इस तरह	मदद करेगा तुम्हारी	रब तुम्हारा	साथ पांच

اٰلٰفٍ	مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	مُسَوِّمِينَ (125)	وَمَا	جَعَلَهُ	اللّٰهُ	إِلَّا
हज़ार	फ़रिश्तों के	निशान लगाने वाले	और नहीं	बनाया उसे	अल्लाह ने	मगर

ربع

بُشْرٰى	لَكُمْ	وَلِتَطْمَئِنَّ	قُلُوبُكُمْ	بِهٖ ؕ	وَمَا	النَّصْرُ	إِلَّا
ख़ुशख़बरी	तुम्हारे लिए	और ताकि मुत्मइन हो जाएं	दिल तुम्हारे	साथ इसके	और नहीं	मदद	मगर

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ	الْعَزِيزِ	الْحَكِيمِ ۙ (126)	لِيَقْطَعَ	طَرَفًا	مِّنَ الَّذِينَ
अल्लाह के पास से	जो बहुत ज़बरदस्त है	बहुत हिक्मत वाला है	ताकि वो काट दे	एक हिस्सा	उनका जिन्होंने

كَفَرُوٓا	أَوْ	يَكْبِتَهُمْ	فَيَنْقَلِبُوا	خَآئِبِينَ (127)	لَيْسَ	لَكَ
कुफ़्र किया	या	वो ज़लील कर दे उन्हें	तो वो लौट जाएं	नामुराद (होकर)	नहीं है	आपके लिए

مِنَ الْأَمْرِ	شَيْءٌ	أَوْ	يَتُوبَ	عَلَيْهِمْ	أَوْ	يُعَذِّبَهُمْ	فَإِنَّهُمْ
मामले में से	कुछ भी	ख़्वाह	वो मेहरबान हो जाए	उन पर	या	वो अज़ाब दे उन्हें	तो बेशक वो

ظٰلِمُونَ (128)	وَلِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْأَرْضِ ؕ	يَغْفِرُ
ज़ालिम हैं	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	वो बख़्श देता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيُعَذِّبُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
जिसके लिए	वो चाहता है	और वो अज़ाब देता है	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

ع 13 9 4

رَّحِيْمٌ ﴿129﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَاْكُلُوا	الرِّبٰوٓا	اَضْعَافًا
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम खाओ	सूद	कई गुना

مُّضٰعَفَةً ۪	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿130﴾ ج	وَاتَّقُوا	النَّارَ
बढ़ा चढ़ा कर	और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	और बचो/डरो	आग से

الَّتِيْٓ	اُعِدَّتْ	لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿131﴾ ج	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَالرَّسُوْلَ	لَعَلَّكُمْ
वो जो	तैयार की गई है	काफ़िरों के लिए	और इताअत करो	अल्लाह की	और रसूल की	ताकि तुम

تُرْحَمُوْنَ ﴿132﴾ ج	وَسَارِعُوْٓا	اِلٰى مَغْفِرَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَجَنَّةٍ	
तुम रहम किए जाओ	और एक दूसरे से जल्दी करो	तरफ़ बख़्शिश के	अपने रब की तरफ़ से	और जन्नत के	

عَرْضُهَا	السَّمٰوٰتُ	وَالْاَرْضُ ۙ	اُعِدَّتْ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿133﴾ ۙ	الَّذِيْنَ
चौड़ाई है जिस की	आसमान	और ज़मीन	वो तैयार की गई है	मुत्तक़ी लोगों के लिए	वो लोग जो

يُنْفِقُوْنَ	فِي السَّرَّآءِ	وَالضَّرَّآءِ	وَالْكٰظِمِيْنَ	الْغَيْظَ	وَالْعَافِيْنَ
ख़र्च करते हैं	ख़ुशी में	और तकलीफ़ में	और ज़ब्त करने वाले हैं	सख़्त ग़ुस्से को	और दरगुज़र करने वाले हैं

عَنِ النَّاسِ ؕ	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿134﴾ ج	وَالَّذِيْنَ	اِذَا	فَعَلُوْا
लोगों से	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से	और वो लोग जो	जब	करते हैं

فَاحِشَةً	اَوْ	ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	ذَكَرُوا	اللّٰهَ	فَاسْتَغْفَرُوْا
कोई बेहयाई	या	वो ज़ुल्म करते हैं	अपने नफ़्सों पर	वो याद करते हैं	अल्लाह को	पस माफ़ी मांगते हैं

لِذُنُوْبِهِمْ ۪	وَمَنْ	يَّغْفِرُ	الذُّنُوْبَ	اِلَّا	اللّٰهُ ۗ	وَلَمْ
अपने गुनाहों के लिए	और कौन है जो	बख़्श दे	गुनाहों को	सिवाए	अल्लाह के	और नहीं

يُصِرُّوْا	عَلٰى	مَا	فَعَلُوْا	وَهُمْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿135﴾	اُولٰٓئِكَ	جَزَآؤُهُمْ
वो इसरार करते	ऊपर उसके	जो	उन्होंने किया	जबकि वो	वो जानते हैं	यही लोग हैं	बदला उनका

مَّغْفِرَةٌ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	وَجَنّٰتٌ	تَجْرِىْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
बख़्शिश है	उनके रब की तरफ़ से	और बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	وَنِعْمَ	اَجْرُ	الْعٰمِلِيْنَ ﴿136﴾ ؕ	قَدْ	خَلَتْ
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और कितना अच्छा है	अजर	अमल करने वालों का	तहक़ीक़	गुज़र चुके

مِنْ قَبْلِكُمْ	سُنَنٌ ۙ	فَسِيْرُوْا	فِى الْاَرْضِ	فَانْظُرُوْا	كَيْفَ
तुम से पहले	कई तरीक़े	तो चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो	किस तरह

كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿137﴾	هٰذَا	بَيَانٌ	لِّلنَّاسِ	وَهُدًى
हुआ	अंजाम	झुठलाने वालो का	ये	एक बयान है	लोगों के लिए	और हिदायत

وَّمَوْعِظَةٌ	لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿138﴾	وَلَا	تَهِنُوْا	وَلَا	تَحْزَنُوْا	وَاَنْتُمُ
और नसीहत है	मुत्तक़ी लोगों के लिए	और ना	तुम कमज़ोर पड़ो	और ना	तुम ग़म करो	और तुम ही

الْاَعْلَوْنَ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿139﴾	اِنْ	يَّمْسَسْكُمْ	قَرْحٌ	فَقَدْ
बुलंद हो	अगर	हो तुम	मोमिन	अगर	पहुंचा तुम्हें	कोई ज़ख़्म	तो तहक़ीक़

مَسَّ	الْقَوْمَ	قَرْحٌ	مِّثْلُهٗ ؕ	وَتِلْكَ	الْاَيَّامُ	نُدَاوِلُهَا
पहुंच चुका है	उस क़ौम को	ज़ख़्म	मानिंद उसी के	और ये	दिन	हम फेरते रहते हैं उन्हें

بَيْنَ	النَّاسِ ۚ	وَلِيَعْلَمَ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَيَتَّخِذَ
दर्मियान	लोगों के	और ताकि जान ले	अल्लाह	उनको जो	ईमान लाए	और वो बना ले

مِنْكُمْ	شُهَدَآءَ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يُحِبُّ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿140﴾ ۙ	وَلِيُمَحِّصَ	اللّٰهُ
तुम में से	गवाह/शहीद	और अल्लाह	नहीं वो मोहब्बत रखता	ज़ालिमों से	और ताकि ख़ालिस कर ले	अल्लाह

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَيَمْحَقَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿141﴾	اَمْ	حَسِبْتُمْ	اَنْ	تَدْخُلُوا
उन्हें जो	ईमान लाए	और मिटा दे	काफ़िरों को	क्या	गुमान किया तुमने	कि	तुम दाख़िल हो जाओगे

الْجَنَّةَ	وَلَمَّا	يَعْلَمِ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	جٰهَدُوْا	مِنْكُمْ	وَيَعْلَمَ
जन्नत में	हालांकि अभी तक नहीं	जाना	अल्लाह ने	उन्हें जिन्होंने	जिहाद किया	तुम में से	और (ताकि) वो जान ले

الصّٰبِرِيْنَ ﴿142﴾	وَلَقَدْ	كُنْتُمْ	تَمَنَّوْنَ	الْمَوْتَ	مِنْ قَبْلِ	اَنْ
सब्र करने वालों को	और अलबत्ता तहक़ीक़	थे तुम	तुम तमन्ना करते	मौत की	इस से पहले	कि

14 ع 14 5

تَلْقَوْهُ ص	فَقَدْ	رَاَيْتُمُوْهُ	وَاَنْتُمْ	تَنْظُرُوْنَ ﴿143﴾ ع	وَمَا	مُحَمَّدٌ
तुम मिलो उसे	पस तहक़ीक़	देख लिया तुमने उसे	और तुम	तुम देख रहे थे	और नहीं हैं	मोहम्मद

اِلَّا	رَسُوْلٌ ج	قَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِ	الرُّسُلُ ط	اَفَاۡئِنْ
मगर	एक रसूल	तहक़ीक़	गुज़र चुके	उनसे पहले	कई रसूल	क्या फिर अगर

مَّاتَ	اَوْ قُتِلَ	انْقَلَبْتُمْ	عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ط	وَمَنْ	يَّنْقَلِبْ
वो मर जाएं	या वो क़त्ल कर दिए जाएं	पलट जाओगे तुम	अपनी एड़ियों पर	और जो कोई	पलट जाएगा

عَلٰى عَقِبَيْهِ	فَلَنْ	يَّضُرَّ	اللّٰهَ	شَيْـًٔا ط	وَسَيَجْزِى	اللّٰهُ
अपनी दोनों एड़ियों पर	तो हरगिज़ नहीं	वो नुक़्सान देगा	अल्लाह को	कुछ भी	और अनक़रीब बदला देगा	अल्लाह

الشّٰكِرِيْنَ ﴿144﴾	وَمَا	كَانَ	لِنَفْسٍ	اَنْ	تَمُوْتَ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ
शुक्र करने वालों को	और नहीं	है	किसी नफ़्स के लिए	कि	वो मरे	मगर	अल्लाह के इज़्न से

كِتٰبًا	مُّؤَجَّلًا ط	وَمَنْ	يُّرِدْ	ثَوَابَ	الدُّنْيَا	نُؤْتِهٖ	مِنْهَا ج
लिखा हुआ है	मुक़र्रर वक़्त	और जो कोई	चाहता है	बदला/सवाब का	दुनिया का	हम दे देते हैं उसे	उसमें से

وَمَنْ	يُّرِدْ	ثَوَابَ	الْاٰخِرَةِ	نُؤْتِهٖ	مِنْهَا ط	وَسَنَجْزِى
और जो कोई	चाहता है	सवाब	आख़िरत का	हम दे देंगे उसे	उसमें से	और अनक़रीब हम बदला देंगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الشّٰكِرِيْنَ ﴿145﴾	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ نَّبِيٍّ	قٰتَلَ ۙ	مَعَهٗ	رِبِّيُّوْنَ	كَثِيْرٌ ج
शुक्र करने वालों को	और कितने ही	नबियों में से	जंग की	उनके हमराह	रब वालों ने	बहुत से

فَمَا	وَهَنُوْا	لِمَآ	اَصَابَهُمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَمَا	ضَعُفُوْا
तो ना	उन्होंने सुस्ती दिखाई	उसके लिए जो	पहुंचा उन्हें	अल्लाह के रास्ते में	और ना	वो कमज़ोर पड़े

وَمَا	اسْتَكَانُوْا ط	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الصّٰبِرِيْنَ ﴿146﴾	وَمَا	كَانَ
और ना	वो दबे	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	सब्र करने वालों से	और ना	थी

قَوْلَهُمْ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْا	رَبَّنَا	اغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا
बात उनकी	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	ऐ हमारे रब	बख़्श दे हमारे लिए	गुनाह हमारे

وَاِسْرَافَنَا	فِيْٓ اَمْرِنَا	وَثَبِّتْ	اَقْدَامَنَا	وَانْصُرْنَا	عَلَى الْقَوْمِ
और ज़्यादतियां हमारी	हमारे मामले में	और जमा दे	हमारे क़दमों को	और मदद फ़रमा हमारी	ऊपर उन लोगों के

الْكٰفِرِيْنَ ﴿147﴾	فَاٰتٰىهُمُ	اللّٰهُ	ثَوَابَ	الدُّنْيَا	وَحُسْنَ	ثَوَابِ
जो काफ़िर हैं	तो अता किया उन्हें	अल्लाह ने	सवाब	दुनिया का	और अच्छा	सवाब

الْاٰخِرَةِ ط	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿148﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا
आख़िरत का	और अल्लाह	मोहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

ع 15 5 6

اِنْ	تُطِيْعُوا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يَرُدُّوْكُمْ	عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ
अगर	तुम इताअत करोगे	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो फेर देंगे तुम्हें	तुम्हारी एड़ियों पर

فَتَنْقَلِبُوْا	خٰسِرِيْنَ ﴿149﴾	بَلِ	اللّٰهُ	مَوْلٰىكُمْ ج	وَهُوَ	خَيْرُ
वरना पलट जाओगे तुम	ख़सारा पाने वाले (होकर)	बल्कि	अल्लाह	मददगार है तुम्हारा	और वो	बेहतरीन है

النّٰصِرِيْنَ ﴿150﴾	سَنُلْقِيْ	فِيْ قُلُوْبِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوا	الرُّعْبَ
मदद करने वालों में	अनक़रीब हम डाल देंगे	दिलों में	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया	रौब को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سُلْطٰنًا ج	بِهٖ	يُنَزِّلْ	لَمْ	مَا	بِاللّٰهِ	اَشْرَكُوْا	بِمَآ
कोई दलील	जिसकी	उसने नाज़िल की	नहीं	उसको जो	साथ अल्लाह के	उन्होंने शरीक ठहराया	बवजह इसके जो

وَلَقَدْ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿151﴾	مَثْوَى	وَبِئْسَ	النَّارُ ط	وَمَاْوٰىهُمُ
और अलबत्ता तहक़ीक़	ज़ालिमों का	ठिकाना	और कितना बुरा है	आग है	और ठिकाना उनका

اِذَا	حَتّٰٓى	بِاِذْنِهٖ ج	تَحُسُّوْنَهُمْ	اِذْ	وَعْدَهٗٓ	اللّٰهُ	صَدَقَكُمُ
जब	यहां तक कि	उसके इज़्न से	तुम क़त्ल कर रहे थे उन्हें	जब	वादा अपना	अल्लाह ने	सच कर दिखाया तुमसे

مَآ	مِّنْۢ بَعْدِ	وَعَصَيْتُمْ	فِى الْاَمْرِ	وَتَنَازَعْتُمْ	فَشِلْتُمْ
जो	बाद इसके	और नाफ़रमानी की तुमने	(रसूल के) हुक्म के बारे में	और झगड़ा किया तुमने	बुज़दिली दिखाई तुमने

وَمِنْكُمْ	الدُّنْيَا	يُّرِيْدُ	مَّنْ	مِنْكُمْ	تُحِبُّوْنَ ط	مَّا	اَرٰىكُمْ
और तुम में से कोई है	दुनिया को	चाहता है	जो	तुममें से कोई है	तुम पसंद करते हो	वो जो	उसने दिखाया तुम्हें

لِيَبْتَلِيَكُمْ ج	عَنْهُمْ	صَرَفَكُمْ	ثُمَّ	الْاٰخِرَةَ ج	يُّرِيْدُ	مَّنْ
ताकि वो आज़माए तुम्हें	उनसे	उसने फेर दिया तुम्हें	फिर	आख़िरत को	चाहता है	जो

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿152﴾	ذُوْ فَضْلٍ	وَاللّٰهُ	عَنْكُمْ ط	عَفَا	وَلَقَدْ
मोमिनों पर	फ़ज़्ल वाला है	और अल्लाह	तुमसे	उसने दरगुज़र किया	और अलबत्ता तहक़ीक़

يَدْعُوْكُمْ	وَّالرَّسُوْلُ	عَلٰٓى اَحَدٍ	تَلْوٗنَ	وَلَا	تُصْعِدُوْنَ	اِذْ
बुला रहे थे तुम्हें	और रसूल	किसी एक को	तुम मुड़ कर देखते थे	और ना	तुम चढ़े जा रहे थे	जब

مَا	عَلٰى	تَحْزَنُوْا	لِّكَيْلَا	بِغَمٍّ	غَمًّا	فَاَثَابَكُمْ	فِىٓ اُخْرٰىكُمْ
जो	उस पर	तुम रंज करो	ताकि ना	साथ ग़म के	ग़म	तो उसने दिया तुम्हें	तुम्हारे पीछे से

بِمَا	خَبِيْرٌۢ	وَاللّٰهُ	اَصَابَكُمْ ط	مَآ	وَلَا	فَاتَكُمْ
उसकी जो	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	और अल्लाह	पहुंचा तुम्हें	जो	और ना	छिन गया तुमसे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَعْمَلُوْنَ ﴿153﴾	ثُمَّ	اَنْزَلَ	عَلَيْكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	الْغَمِّ	اَمَنَةً
तुम अमल करते हो	फिर	उसने उतारा	तुम पर	बाद	ग़म के	अमन

نُّعَاسًا	يَّغْشٰى	طَآئِفَةً	مِّنْكُمْ ۙ	وَ طَآئِفَةٌ	قَدْ	اَهَمَّتْهُمْ
एक ऊंघ	ढांप लिया उसने	एक गिरोह को	तुम में से	और एक गिरोह	तहक़ीक़	फ़िक्र में डाला उन्हें

اَنْفُسُهُمْ	يَظُنُّوْنَ	بِاللّٰهِ	غَيْرَ الْحَقِّ	ظَنَّ	الْجَاهِلِيَّةِ ؕ
उनके नफ़्सों ने	वो गुमान कर रहे थे	अल्लाह के बारे में	नाहक़	गुमान करना	जाहिलियत का

يَقُوْلُوْنَ	هَلْ	لَّنَا	مِنَ الْاَمْرِ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	قُلْ	اِنَّ
वो कह रहे थे	क्या है	हमारे लिए	मामले में से	कोई चीज़	कह दीजिए	बेशक

الْاَمْرَ	كُلَّهٗ	لِلّٰهِ ؕ	يُخْفُوْنَ	فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ	مَّا	لَا يُبْدُوْنَ
मामला	सब का सब	अल्लाह ही के लिए है	वो छुपा रहे थे	अपने नफ़्सों में	जो	नहीं वो ज़ाहिर कर रहे थे

لَكَ ؕ	يَقُوْلُوْنَ	لَوْ	كَانَ	لَنَا	مِنَ الْاَمْرِ	شَيْءٌ
आप के लिए	वो कह रहे थे	अगर	होता	हमारे लिए	मामले में से	कुछ भी

مَّا	قُتِلْنَا	هٰهُنَا ؕ	قُلْ	لَّوْ	كُنْتُمْ	فِيْ بُيُوْتِكُمْ	لَبَرَزَ
ना	क़त्ल किए जाते हम	इस जगह	कह दीजिए	अगर	होते तुम	अपने घरों में	अलबत्ता निकल पड़ते

الَّذِيْنَ	كُتِبَ	عَلَيْهِمُ	الْقَتْلُ	اِلٰى	مَضَاجِعِهِمْ ۚ	وَ لِيَبْتَلِيَ
वो जो	लिख दिया गया था	जिन पर	क़त्ल होना	तरफ़	अपने सोने (मौत) के मक़ामात के	और ताकि आज़माए

اللّٰهُ	مَا	فِيْ صُدُوْرِكُمْ	وَ لِيُمَحِّصَ	مَا	فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ
अल्लाह	उसको जो	तुम्हारे सीनों में है	और ताकि ख़ालिस कर दे	उसको जो	तुम्हारे दिलों में है	और अल्लाह

عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿154﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	تَوَلَّوْا	مِنْكُمْ	يَوْمَ
ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	बेशक	वो जो	फिर गए	तुम में से	जिस दिन

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِبَعْضِ	الشَّيْطٰنُ	اسْتَزَلَّهُمُ	إِنَّمَا	الْجَمْعٰنِ لا	الْتَقَى
बवजह बाज़(आमाल)के	शैतान ने	फिसलाया था उन्हें	बेशक	दो जमाअतें	आमने सामने हुईं

غَفُورٌ	اللّٰهَ	إِنَّ	عَنْهُمْ ط	اللّٰهُ	عَفَا	وَلَقَدْ	كَسَبُوا ج	مَا
बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	बेशक	उनसे	अल्लाह ने	दरगुज़र किया	और अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने कमाए	जो

ع 16 7 7

كَفَرُوا	كَالَّذِينَ	لَا تَكُونُوا	اٰمَنُوا	يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ	حَلِيمٌ 155 ع
जिन्होंने कुफ़्र किया	उन की तरह	ना तुम हो जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत बुर्दबार है

كَانُوا	أَوْ	فِي الْأَرْضِ	ضَرَبُوا	إِذَا	لِإِخْوٰنِهِمْ	وَقَالُوا
थे वो	या	ज़मीन में	वो चले फिरे	जब	अपने भाईयों को	और उन्होंने कहा

قُتِلُوا ج	وَمَا	مَاتُوا	مَا	عِنْدَنَا	كَانُوا	لَّوْ	غُزًّى
वो क़त्ल किए जाते	और ना	वो मरते	ना	पास हमारे	होते वो	अगर	ग़ाज़ी/लड़ने वाले

يُحْيِ	وَاللّٰهُ	فِي قُلُوبِهِمْ ط	حَسْرَةً	ذٰلِكَ	اللّٰهُ	لِيَجْعَلَ
ज़िंदा करता है	और अल्लाह	उनके दिलों में	हसरत का सबब	उसको	अल्लाह	ताकि बना दे

قُتِلْتُمْ	وَلَئِنْ	بَصِيرٌ 156	تَعْمَلُونَ	بِمَا	وَاللّٰهُ	وَيُمِيتُ ط
क़त्ल किए जाओ तुम	और अलबत्ता अगर	ख़ूब देखने वाला है	तुम अमल करते हो	उसे जो	और अल्लाह	और वो मौत देता है

خَيْرٌ	وَرَحْمَةٌ	مِّنَ اللّٰهِ	لَمَغْفِرَةٌ	مُتُّمْ	أَوْ	فِي سَبِيلِ اللّٰهِ
बहुत बेहतर है	और रहमत	अल्लाह की तरफ़ से	अलबत्ता बख़्शिश	मर जाओ तुम	या	अल्लाह के रास्ते में

اللّٰهِ	لَإِلَى	قُتِلْتُمْ	أَوْ	مُّتُّمْ	وَلَئِنْ	يَجْمَعُونَ 157	مِّمَّا
अल्लाह के	अलबत्ता तरफ़	क़त्ल किए जाओ तुम	या	मर जाओ तुम	और अलबत्ता अगर	वो जमा कर रहे हैं	उस से जो

كُنْتَ	وَلَوْ	لَهُمْ ج	لِنْتَ	مِّنَ اللّٰهِ	رَحْمَةٍ	فَبِمَا	تُحْشَرُونَ 158
होते आप	और अगर	उनके लिए	नर्म हो गए आप	अल्लाह की तरफ़ से	रहमत के	फिर बवजह	तुम इकट्ठे किए जाओगे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَظًّا	غَلِيْظَ	الْقَلْبِ	لَانْفَضُّوْا	مِنْ حَوْلِكَ ص	فَاعْفُ	عَنْهُمْ
तुंदख़ू	सख़्त	दिल	अलबत्ता वो मुंतशिर हो जाते	आपके आस पास से	पस दरगुज़र कीजिए	उनसे

وَاسْتَغْفِرْ	لَهُمْ	وَشَاوِرْهُمْ	فِي الْاَمْرِ ج	فَاِذَا	عَزَمْتَ
और बख़्शिश मांगिए	उनके लिए	और मशवरा कीजिए उनसे	मामले में	फिर जब	पुख़्ता इरादा करें आप

فَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَوَكِّلِيْنَ (159)	اِنْ
तो तवक्कल कीजिए	अल्लाह पर	बेशक	अल्लाह	मोहब्बत रखता है	तवक्कल करने वालों से	अगर

يَّنْصُرْكُمُ	اللّٰهُ	فَلَا	غَالِبَ	لَكُمْ ج	وَاِنْ	يَّخْذُلْكُمْ
मदद करे तुम्हारी	अल्लाह	तो नहीं	कोई ग़ालिब आने वाला	तुम पर	और अगर	वो छोड़ दे तुम्हें

فَمَنْ	ذَا الَّذِيْ	يَنْصُرُكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط	وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ
तो कौन है	वो जो	मदद करेगा तुम्हारी	बाद इसके	और अल्लाह ही पर	पस चाहिए के तवक्कल किया करें

الْمُؤْمِنُوْنَ (160)	وَمَا	كَانَ	لِنَبِيٍّ	اَنْ	يَّغُلَّ ط	وَمَنْ	يَّغْلُلْ
ईमान वाले	और नहीं	है	किसी नबी के लिए	कि	वो ख़्यानत करे	और जो कोई	ख़्यानत करेगा

يَاْتِ	بِمَا	غَلَّ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ج	ثُمَّ	تُوَفّٰى	كُلُّ	نَفْسٍ
वो ले आएगा	उसको जो	उसने ख़्यानत की	दिन	क़यामत के	फिर	पूरा पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को

مَّا	كَسَبَتْ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ (161)	اَفَمَنِ	اتَّبَعَ	رِضْوَانَ اللّٰهِ
जो	उसने कमाया	और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	क्या भला वो जो	पैरवी करे	अल्लाह की रज़ा की

كَمَنْۢ	بَآءَ	بِسَخَطٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَمَاْوٰىهُ	جَهَنَّمُ ط
उस की तरह हो सकता है जो	पलटे	साथ नाराज़गी के	अल्लाह कि तरफ़ से	और ठिकाना उसका	जहन्नम हो

وَبِئْسَ	الْمَصِيْرُ (162)	هُمْ	دَرَجٰتٌ	عِنْدَ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	بَصِيْرٌۢ
और कितनी बुरी है	लौटने की जगह	वो	(मुख़्तलिफ़) दर्जों में हैं	अल्लाह के नज़दीक	और अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِمَا	يَعْمَلُوْنَ ﴿163﴾	لَقَدْ	مَنَّ	اللّٰهُ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	اِذْ	بَعَثَ
उसको जो	वो अमल करते हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	एहसान किया	अल्लाह ने	मोमिनों पर	जब	उसने भेजा

فِيْهِمْ	رَسُوْلًا	مِّنْ اَنْفُسِهِمْ	يَتْلُوْا	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتِهٖ	وَيُزَكِّيْهِمْ
उन्हीं में	एक रसूल	उनके नफ़्सों में से	वो तिलावत करता है	उन पर	आयात उसकी	और वो पाक करता है उन्हें

وَيُعَلِّمُهُمُ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ ج	وَاِنْ	كَانُوْا	مِنْ قَبْلُ
और वो सिखाता है उन्हें	किताब	और हिक्मत	और बेशक	थे वो	इससे पहले

لَفِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿164﴾	اَوَلَمَّآ	اَصَابَتْكُمْ	مُّصِيْبَةٌ	قَدْ	اَصَبْتُمْ
अलबत्ता गुमराही में	खुली/वाज़ेह	क्या भला जब	पहुंची तुम्हें	एक मुसीबत	तहक़ीक़	पहुंचाई तुमने

مِّثْلَيْهَا لا	قُلْتُمْ	اَنّٰى	هٰذَا ط	قُلْ	هُوَ	مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ط
उस से दोगुनी	कहा तुमने	कहां से (आई)	ये	कह दीजिए	वो	तुम्हारे नफ़्सों की जानिब से है

اِنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿165﴾	وَمَآ	اَصَابَكُمْ	يَوْمَ
बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	और जो कुछ	पहुंचा तुम्हें	जिस दिन

الْتَقَى	الْجَمْعٰنِ	فَبِاِذْنِ اللّٰهِ	وَلِيَعْلَمَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿166﴾ لا	وَلِيَعْلَمَ
आमने-सामने हुईं	दो जमाअतें	पस अल्लाह के इज़्न से था	और ताकि वो जान ले	मोमिनों को	और ताकि वो जान ले

الَّذِيْنَ	نَافَقُوْا صلے ج	وَقِيْلَ	لَهُمْ	تَعَالَوْا	قَاتِلُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اَوِ
उनको जिन्होंने	मुनाफ़िक़त की	और कहा गया	उन्हें	आओ	जंग करो	अल्लाह के रास्ते में	या

ادْفَعُوْا ط	قَالُوْا	لَوْ	نَعْلَمُ	قِتَالًا	لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ط	هُمْ	لِلْكُفْرِ
दिफ़ा करो	उन्होंने कहा	अगर	हम जानते होते	जंग करना	जरूर पैरवी करते हम तुम्हारी	वो	कुफ़्र के

يَوْمَئِذٍ	اَقْرَبُ	مِنْهُمْ	لِلْاِيْمَانِ ج	يَقُوْلُوْنَ	بِاَفْوَاهِهِمْ	مَّا
उस दिन	ज़्यादा क़रीब थे	उनसे	बनिस्बत ईमान के	वो कह रहे थे	अपने मुंहों से	वो जो

النصف

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَيْسَ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يَكْتُمُوْنَ ج ﴿167﴾	اَلَّذِيْنَ
नहीं था	उनके दिलों में	और अल्लाह	ज़्यादा जानता है	उसको जो	वो छुपाते हैं	वो जिन्होंने

قَالُوْا	لِاِخْوَانِهِمْ	وَقَعَدُوْا	لَوْ	اَطَاعُوْنَا	مَا	قُتِلُوْا ط	قُلْ
कहा	अपने भाईयों को	और वो ख़ुद बैठ गए	अगर	वो इताअत करते हमारी	ना	वो क़त्ल किए जाते	कह दीजिए

فَادْرَءُوْا	عَنْ اَنْفُسِكُمُ	الْمَوْتَ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿168﴾	وَلَا
पस दूर करो	अपने नफ़्सों से	मौत को	अगर	हो तुम	सच्चे	और ना

تَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	قُتِلُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اَمْوَاتًا ط	بَلْ	اَحْيَآءٌ
आप हरगिज़ गुमान करें	उनको जो	क़त्ल कर दिए गए	अल्लाह के रास्ते में	मुर्दा	बल्कि	ज़िंदा हैं

عِنْدَ	رَبِّهِمْ	يُرْزَقُوْنَ لا ﴿169﴾	فَرِحِيْنَ	بِمَآ	اٰتٰهُمُ	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ لا
पास	अपने रब के	वो रिज़्क़ दिए जाते हैं	ख़ुश हैं	उस पर जो	अता किया उन्हें	अल्लाह ने	अपने फ़ज़्ल से

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ	بِالَّذِيْنَ	لَمْ	يَلْحَقُوْا	بِهِمْ	مِّنْ خَلْفِهِمْ لا	اَلَّا
और वो ख़ुश होते हैं	उनके बारे में	नहीं	वो मिले	उन्हें	उनके पीछे से	कि ना

خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿170﴾	يَسْتَبْشِرُوْنَ	بِنِعْمَةٍ
कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	वो ख़ुश होते हैं	नेअमत पर

وقف لازم

مِّنَ اللّٰهِ	وَفَضْلٍ لا	وَّاَنَّ	اللّٰهَ	لَا يُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ج ﴿171﴾
अल्लाह की तरफ़ से	और फ़ज़्ल पर	और बेशक	अल्लाह	नहीं वो ज़ाया करता	अजर	ईमान वालों का

ع 17 16 8

اَلَّذِيْنَ	اسْتَجَابُوْا	لِلّٰهِ	وَالرَّسُوْلِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَآ	اَصَابَهُمُ
वो जिन्होंने	हुक्म माना	अल्लाह का	और रसूल का	बाद इसके	जो	पहुंचा उन्हें

ع 2

اَلْقَرْحُ ط	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	مِنْهُمْ	وَاتَّقَوْا	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ج ﴿172﴾
ज़ख़्म	उनके लिए जिन्होंने	एहसान किया	उनमें से	और तक़वा किया	अज्र है	बहुत बड़ा

جَمَعُوْا	قَدْ	النَّاسَ	اِنَّ	النَّاسُ	لَهُمُ	قَالَ	اَلَّذِيْنَ
वो जमा हो गए हैं	तहक़ीक़	लोग	बेशक	लोगों ने	उन्हें	कहा	वो जो

اللّٰهُ	حَسْبُنَا	وَّقَالُوْا	اِيْمَانًا ۖۗ	فَزَادَهُمْ	فَاخْشَوْهُمْ	لَكُمْ
अल्लाह	काफ़ी है हमें	और उन्होंने कहा	ईमान में	पस उसने बढ़ा दिया उन्हें	पस डरो उनसे	तुम्हारे लिए

لَّمْ	وَفَضْلٍ	مِّنَ اللّٰهِ	بِنِعْمَةٍ	فَانْقَلَبُوْا	الْوَكِيْلُ (173)	وَنِعْمَ
नहीं	और फ़ज़्ल के	अल्लाह की तरफ़ से	साथ नेअमत के	पस वो पलट आए	कारसाज़	और कितना अच्छा है

ذُوْ فَضْلٍ	وَاللّٰهُ	رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ	وَّاتَّبَعُوْا	سُوْٓءٌ ۙ	يَمْسَسْهُمْ
फ़ज़्ल वाला है	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा की	और उन्होंने पैरवी की	किसी बुराई(तकलीफ़) ने	छुआ उन्हें

فَلَا	اَوْلِيَآءَهٗ ۖ	يُخَوِّفُ	الشَّيْطٰنُ	ذٰلِكُمُ	اِنَّمَا	عَظِيْمٍ (174)
तो ना	अपने दोस्तों से	जो डराता है	शैतान है	ये	बेशक	बहुत बड़े

يَحْزُنْكَ	وَلَا	مُّؤْمِنِيْنَ (175)	كُنْتُمْ	اِنْ	وَخَافُوْنِ	تَخَافُوْهُمْ
ग़मगीन करें आपको	और ना	ईमान लाने वाले	हो तुम	अगर	और डरो मुझसे	तुम डरो उनसे

شَيْـًٔا ؕ	اللّٰهَ	يَّضُرُّوا	لَنْ	اِنَّهُمْ	فِى الْكُفْرِ ۚ	يُسَارِعُوْنَ	الَّذِيْنَ
कुछ भी	अल्लाह को	वो नुक़सान दे सकते	हरगिज़ नहीं	बेशक वो	कुफ़्र में	जल्दी करते हैं	वो जो

وَلَهُمْ	فِى الْاٰخِرَةِ ۚ	حَظًّا	لَهُمْ	يَّجْعَلَ	اَلَّا	اللّٰهُ	يُرِيْدُ
और उनके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	उनके लिए	वो रखे	कि ना	अल्लाह	चाहता है

لَنْ	بِالْاِيْمَانِ	الْكُفْرَ	اشْتَرَوُا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	عَظِيْمٌ (176)	عَذَابٌ
हरगिज़ नहीं	बदले ईमान के	कुफ़्र को	ख़रीद लिया	वो जिन्होंने	बेशक	बहुत बड़ा	अज़ाब है

يَحْسَبَنَّ	وَلَا	اَلِيْمٌ (177)	عَذَابٌ	وَلَهُمْ	شَيْـًٔا ۚ	اللّٰهَ	يَّضُرُّوا
हरगिज़ गुमान करें	और ना	दर्दनाक	अज़ाब है	और उनके लिए	कुछ भी	अल्लाह को	वो नुक़सान दे सकते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّمَا	لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ	خَيْرٌ	لَّهُمْ	نُمْلِيْ	اَنَّمَا	كَفَرُوْٓا	الَّذِيْنَ
बेशक	उनके नफ़्सों के लिए	बेहतर है	उन्हें	हम ढील दे रहे हैं	बेशक जो	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने

مُّهِيْنٌ (178)	عَذَابٌ	وَلَهُمْ	اِثْمًا ۚ	لِيَزْدَادُوْٓا	لَهُمْ	نُمْلِيْ
रुस्वा करने वाला	अज़ाब है	और उनके लिए	गुनाह में	ताकि वो बढ़ जाएं	उन्हें	हम ढील दे रहे हैं

حَتّٰى	عَلَيْهِ	اَنْتُمْ	مَآ	عَلٰى	الْمُؤْمِنِيْنَ	لِيَذَرَ	اللّٰهُ	كَانَ	مَا
यहां तक कि	जिस पर	तुम	जो हो	ऊपर उसके	मोमिनों को	कि वो छोड़ दे	अल्लाह	है	नहीं

لِيُطْلِعَكُمْ	اللّٰهُ	كَانَ	وَمَا	مِنَ الطَّيِّبِ ؕ	الْخَبِيْثَ	يَمِيْزَ
कि वो आगाह करे तुम्हें	अल्लाह	है	और नहीं	पाक से	नापाक को	वो छांट दे

يَّشَآءُ ۖ	مَنْ	مِنْ رُّسُلِهٖ	يَجْتَبِيْ	اللّٰهَ	وَلٰكِنَّ	عَلَى الْغَيْبِ
वो चाहता है	जिसे	अपने रसूलों में से	चुन लेता है	अल्लाह	और लेकिन	ग़ैब पर

فَلَكُمْ	وَتَتَّقُوْا	تُؤْمِنُوْا	وَاِنْ	وَرُسُلِهٖ ۚ	بِاللّٰهِ	فَاٰمِنُوْا
तो तुम्हारे लिए	और तक़्वा करोगे	तुम ईमान लाओगे	और अगर	और उसके रसूलों पर	अल्लाह पर	पस ईमान लाओ

اٰتٰىهُمُ	بِمَآ	يَبْخَلُوْنَ	الَّذِيْنَ	يَحْسَبَنَّ	وَلَا	عَظِيْمٌ (179)	اَجْرٌ
अता किया उन्हें	साथ उसके जो	बुख़्ल करते हैं	वो जो	हरगिज़ गुमान करें	और ना	बहुत बड़ा	अजर है

لَّهُمْ ؕ	شَرٌّ	هُوَ	بَلْ	لَّهُمْ ؕ	خَيْرًا	هُوَ	مِنْ فَضْلِهٖ	اللّٰهُ
उनके लिए	बुरा है	वो	बल्कि	उनके लिए	बेहतर है	वो	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह ने

وَلِلّٰهِ	الْقِيٰمَةِ ؕ	يَوْمَ	بِهٖ	بَخِلُوْا	مَا	سَيُطَوَّقُوْنَ
और अल्लाह ही के लिए है	क़यामत के	दिन	जिसका	उन्होंने बुख़्ल किया	उसका जो	अनक़रीब वो तौक़ पहनाए जाऐंगे

خَبِيْرٌ (180) ع	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	وَاللّٰهُ	وَالْاَرْضِ ؕ	السَّمٰوٰتِ	مِيْرَاثُ	18 ع 9 9
ख़ूब बाख़बर है	तुम अमल करते हो	उससे जो	और अल्लाह	और ज़मीन की	आसमानों की	मीरास	

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَقَدْ	سَمِعَ	اللّٰهُ	قَوْلَ	الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	فَقِيْرٌ	وَّنَحْنُ
अलबत्ता तहक़ीक़	सुन ली	अल्लाह ने	बात	उनकी जिन्होंने	कहा	बेशक	अल्लाह	फ़क़ीर है	और हम

اَغْنِيَآءُ	سَنَكْتُبُ	مَا	قَالُوْا	وَقَتْلَهُمُ	الْاَنْۢبِيَآءَ	بِغَيْرِ
ग़नी हैं	ज़रूर हम लिख लेंगे	जो	उन्होंने कहा	और क़त्ल करना उनका	अम्बिया को	बग़ैर

حَقٍّ ۙ	وَّنَقُوْلُ	ذُوْقُوْا	عَذَابَ	الْحَرِيْقِ ﴿181﴾	ذٰلِكَ	بِمَا	قَدَّمَتْ
हक़ के	और हम कहेंगे	चखो	अज़ाब	जलने का	ये	बवजह उसके जो	आगे भेजा

اَيْدِيْكُمْ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	لَيْسَ	بِظَلَّامٍ	لِّلْعَبِيْدِ ﴿182﴾ ج	الَّذِيْنَ
तुम्हारे हाथों ने	और बेशक	अल्लाह	नहीं	ज़ुल्म करने वाला	बंदों पर	वो जिन्होंने

قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	عَهِدَ	اِلَيْنَآ	اَلَّا	نُؤْمِنَ	لِرَسُوْلٍ	حَتّٰى
कहा	बेशक	अल्लाह ने	अहद ले रखा है	हमसे	कि ना	हम मानें	किसी रसूल को	यहां तक कि

يَاْتِيَنَا	بِقُرْبَانٍ	تَاْكُلُهُ	النَّارُ ؕ	قُلْ	قَدْ	جَآءَكُمْ	رُسُلٌ
वो लाए हमारे पास	एक क़ुर्बानी	खा जाए उसे	आग	कह दीजिए	तहक़ीक़	आए थे तुम्हारे पास	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِيْ	بِالْبَيِّنٰتِ	وَبِالَّذِيْ	قُلْتُمْ	فَلِمَ	قَتَلْتُمُوْهُمْ	اِنْ
मुझसे पहले	साथ वाज़ेह दलाइल के	और साथ उस चीज़ के जो	कही तुमने	तो क्यों	क़त्ल किया तुमने उन्हें	अगर

كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿183﴾	فَاِنْ	كَذَّبُوْكَ	فَقَدْ	كُذِّبَ	رُسُلٌ
हो तुम	सच्चे	फिर अगर	वो झुठलाऐं आपको	तो तहक़ीक़	झुठलाए गए	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِكَ	جَآءُوْ	بِالْبَيِّنٰتِ	وَالزُّبُرِ	وَالْكِتٰبِ	الْمُنِيْرِ ﴿184﴾
आपसे पहले	वो लाए	वाज़ेह दलाइल	और सहीफ़े	और किताब	रोशन

كُلُّ	نَفْسٍ	ذَآئِقَةُ	الْمَوْتِ ؕ	وَاِنَّمَا	تُوَفَّوْنَ	اُجُوْرَكُمْ
हर	नफ़्स	चखने वाला है	मौत को	और बेशक	तुम पूरे पूरे दिए जाओगे	अजर अपने

وقف لازم

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	فَمَنْ	زُحْزِحَ	عَنِ النَّارِ	وَاُدْخِلَ	الْجَنَّةَ
दिन	क़यामत के	तो जो कोई	दूर किया गया	आग से	और वो दाख़िल कर दिया गया	जन्नत में

فَقَدْ	فَازَ ؕ	وَمَا	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَآ	اِلَّا	مَتَاعُ	الْغُرُوْرِ (185)
तो तहक़ीक़	वो कामयाब हुआ	और नहीं	ज़िंदगी	दुनिया की	मगर	सामान	धोखे का

لَتُبْلَوُنَّ	فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ	وَاَنْفُسِكُمْ قف	وَلَتَسْمَعُنَّ	مِنَ الَّذِيْنَ
अलबत्ता तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	अपने मालों में	अपने नफ़्सों में	और अलबत्ता तुम ज़रूर सुनोगे	उनसे जो

اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَمِنَ الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْٓا	اَذًى
दिए गए	किताब	तुम से पहले	और उनसे जिन्होंने	शिर्क किया	अज़ियत

كَثِيْرًا ؕ	وَاِنْ	تَصْبِرُوْا	وَتَتَّقُوْا	فَاِنَّ	ذٰلِكَ
बहुत सी	और अगर	तुम सब्र करो	और तुम तक़वा करो	तो बेशक	ये

مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (186)	وَاِذْ	اَخَذَ	اللّٰهُ	مِيْثَاقَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا
हिम्मत\अज़्म के कामों में से है	और जब	लिया	अल्लाह ने	पुख़्ता अहद	उनसे जो	दिए गए

الْكِتٰبَ	لَتُبَيِّنُنَّهٗ	لِلنَّاسِ	وَلَا	تَكْتُمُوْنَهٗ ز	فَنَبَذُوْهُ
किताब	अलबत्ता तुम ज़रूर बयान करोगे उसे	लोगों के लिए	और ना	तुम छुपाओगे उसे	फिर उन्होंने फेंक दिया उसे

وَرَآءَ	ظُهُوْرِهِمْ	وَاشْتَرَوْا	بِهٖ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	فَبِئْسَ
पीछे	अपनी पुश्तों के	और उन्होंने बेच डाला	उसे	क़ीमत	थोड़ी में	तो कितना बुरा है

مَا	يَشْتَرُوْنَ (187)	لَا تَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	يَفْرَحُوْنَ	بِمَآ	اَتَوْا
जो	वो ख़रीदो-फ़रोख़्त करते हैं	ना आप हरगिज़ समझें	उन्हें जो	ख़ुश हो रहे हैं	उस पर जो	उन्होंने किया

وَّيُحِبُّوْنَ	اَنْ	يُّحْمَدُوْا	بِمَا	لَمْ	يَفْعَلُوْا	فَلَا	تَحْسَبَنَّهُمْ
और वो पसंद करते हैं	कि	वो तारीफ़ किए जाएं	उस पर जो	नहीं	उन्होंने किया	तो ना	आप हरगिज़ समझें उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِمَفَازَةٍ	مِّنَ الْعَذَابِ ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿188﴾	وَلِلّٰهِ
निजात(पाने वाला)	अज़ाब से	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और अल्लाह ही के लिए है

مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿189﴾ ع
बादशाहत	आसमानों की	और ज़मीन की	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ादिर है

ع 19 9 10

اِنَّ	فِىْ خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاخْتِلَافِ	الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ
बेशक	तख़्लीक़ में	आसमानों	और ज़मीन के	और इख़्तिलाफ़ में	रात	और दिन के

لَاٰيٰتٍ	لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿190﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَذْكُرُوْنَ	اللّٰهَ	قِيٰمًا
अलबत्ता निशानियां हैं	अक़्ल वालों के लिए	वो जो	याद करते हैं	अल्लाह को	खड़े

وَّقُعُوْدًا	وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ	وَيَتَفَكَّرُوْنَ	فِىْ خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ
और बैठे	और अपने पहलुओं पर	और वो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	तख़्लीक़ में	आसमानों

وَالْاَرْضِ ۚ	رَبَّنَا	مَا	خَلَقْتَ	هٰذَا	بَاطِلًا ۚ	سُبْحٰنَكَ
और ज़मीन की	ऐ हमारे रब	नहीं	पैदा किया तूने	ये(सब)	बेमक़्सद	पाक है तू

فَقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ ﴿191﴾	رَبَّنَآ	اِنَّكَ	مَنْ	تُدْخِلِ	النَّارَ
पस बचा हमें	अज़ाब से	आग के	ऐ हमारे रब	बेशक तू	जिसे	तू दाख़िल करेगा	आग में

فَقَدْ	اَخْزَيْتَهٗ ؕ	وَمَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ اَنْصَارٍ ﴿192﴾	رَبَّنَآ
पस तहक़ीक़	रुस्वा कर दिया तूने उसे	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	ऐ हमारे रब

اِنَّنَا	سَمِعْنَا	مُنَادِيًا	يُّنَادِىْ	لِلْاِيْمَانِ	اَنْ	اٰمِنُوْا
बेशक हम	सुना हमने	एक पुकारने वाले को	वो पुकार रहा था	ईमान के लिए	कि	ईमान ले आओ

بِرَبِّكُمْ	فَاٰمَنَّا ۖ	رَبَّنَا	فَاغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا	وَكَفِّرْ	عَنَّا
अपने रब पर	तो ईमान ले आए हम	ऐ हमारे रब	पस बख़्श दे हमारे लिए	हमारे गुनाहों को	और दूर कर दे	हमसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَيِّاٰتِنَا	وَتَوَفَّنَا	مَعَ	الْاَبْرَارِ ﴿193﴾ ج	رَبَّنَا	وَاٰتِنَا	مَا
हमारी बुराईयों को	और फ़ौत कर हमें	साथ	नेक लोगों के	ऐ हमारे रब	और दे हमें	जो

وَعَدْتَّنَا	عَلٰى رُسُلِكَ	وَلَا	تُخْزِنَا	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ط	اِنَّكَ
वादा किया तूने हमसे	अपने रसूलों के(ज़रिए)	और ना	तू रुसवा कर हमें	दिन	क़यामत के	बेशक तू

لَا تُخْلِفُ	الْمِيْعَادَ ﴿194﴾	فَاسْتَجَابَ	لَهُمْ	رَبُّهُمْ	اَنِّيْ
नहीं ख़िलाफ़ करेगा	वादे के	तो(दुआ) क़ुबूल कर ली	उनके लिए	उनके रब ने	के बेशक मैं

لَآ اُضِيْعُ	عَمَلَ	عَامِلٍ	مِّنْكُمْ	مِّنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى ج
नहीं मैं ज़ाया करुंगा	अमल	किसी अमल करने वाले का	तुम में से	ख़्वाह मर्द हो	या	औरत

بَعْضُكُمْ	مِّنْ بَعْضٍ ج	فَالَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	وَاُخْرِجُوْا	مِنْ دِيَارِهِمْ
बाज़ तुम्हारे	बाज़ से हैं	तो वो जिन्होंने	हिजरत की	और वो निकाले गए	अपने घरों से

وَاُوْذُوْا	فِيْ سَبِيْلِيْ	وَقٰتَلُوْا	وَقُتِلُوْا	لَاُكَفِّرَنَّ	عَنْهُمْ
और वो अज़ियत दिए गए	मेरे रास्ते में	और उन्होंने जंग की	और वो मारे गऐ	अलबत्ता मैं ज़रूर दूर कर दूंगा	उनसे

سَيِّاٰتِهِمْ	وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ج
बुराइयां उनकी	और अलबत्ता मैं ज़रूर दाख़िल करुंगा उन्हें	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें

ثَوَابًا	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	عِنْدَهٗ	حُسْنُ	الثَّوَابِ ﴿195﴾
सवाब/बदला है	अल्लाह के पास से	और अल्लाह	उसके पास	अच्छा	सवाब/बदला है

لَا يَغُرَّنَّكَ	تَقَلُّبُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فِي الْبِلَادِ ﴿196﴾ ط	مَتَاعٌ
हरगिज़ ना धोखे में डाले आपको	चलना फिरना	उनका जिन्होंने	कुफ़्र किया	शहरों में	फ़ायदा उठाना है

قَلِيْلٌ قف	ثُمَّ	مَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ط	وَبِئْسَ	الْمِهَادُ ﴿197﴾	لٰكِنِ
थोड़ा सा	फिर	ठिकाना उनका	जहन्नम है	और कितना बुरा है	ठिकाना	लेकिन

الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	رَبَّهُمْ	لَهُمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا
वो जो	डरे	अपने रब से	उनके लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से

الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	نُزُلًا	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ	وَمَا	عِنْدَ اللّٰهِ
नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उन में	मेहमानी है	अल्लाह के पास से	और जो	पास है अल्लाह के

الثلثة

خَيْرٌ	لِّلْاَبْرَارِ ﴿198﴾	وَاِنَّ	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	لَمَنْ	يُّؤْمِنُ
बेहतर है	नेकोकारों के लिए	और बेशक	अहले किताब में से	अलबत्ता जो	ईमान रखते हैं

بِاللّٰهِ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْهِمْ	خٰشِعِيْنَ
अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ उनके	ख़ुशूअ करने वाले हैं

لِلّٰهِ ۙ	لَا يَشْتَرُوْنَ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ
अल्लाह के लिए	नहीं वो बेचते	आयात को	अल्लाह की	क़ीमत	थोड़ी में	यही लोग हैं	उनके लिए है

اَجْرُهُمْ	عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿199﴾
अजर उनका	पास उनके रब के	बेशक	अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اصْبِرُوْا	وَصَابِرُوْا	وَرَابِطُوْا ۟
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	सब्र करो	और मुक़ाबले में मज़बूत रहो	और तैयार रहो

20 ع 11 11

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿200﴾ ع
और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	फ़लाह पा जाओ

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ 92 4

اٰيَاتُهَا: 176 — رُكُوْعَاتُهَا: 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ	اتَّقُوْا	رَبَّكُمُ	الَّذِيْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ
ऐ	लोगो	डरो	अपने रब से	वो जिसने	पैदा किया तुम्हें	एक जान से

وَّخَلَقَ	مِنْهَا	زَوْجَهَا	وَبَثَّ	مِنْهُمَا	رِجَالًا	كَثِيْرًا
और उसने पैदा की	उसी से	बीवी उसकी	और उसने फैला दिए	उन दोनों से	मर्द	बहुत से

وَّنِسَآءً ۚ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	الَّذِيْ	تَسَآءَلُوْنَ	بِهٖ
और औरतें	और डरो	अल्लाह से	वो जो	तुम एक दूसरे से सवाल करते हो	उसके वास्ते से

وَالْاَرْحَامَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلَيْكُمْ	رَقِيْبًا ①	وَاٰتُوا
और रिश्तों को(काटने से)	बेशक	अल्लाह	है	तुम पर	निगरान	और दो

الْيَتٰمٰٓى	اَمْوَالَهُمْ	وَلَا	تَتَبَدَّلُوا	الْخَبِيْثَ	بِالطَّيِّبِ ۪	وَلَا
यतीमों को	माल उनके	और ना	तुम तब्दील करो	नापाक को	पाक से	और ना

تَاْكُلُوْٓا	اَمْوَالَهُمْ	اِلٰٓى	اَمْوَالِكُمْ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	حُوْبًا
तुम खाओ	माल उनके	तरफ़	अपने मालों के(मिलाकर)	यक़ीनन वो	है वो	गुनाह

كَبِيْرًا ②	وَاِنْ	خِفْتُمْ	اَلَّا	تُقْسِطُوْا	فِى الْيَتٰمٰى	فَانْكِحُوْا
बहुत बड़ा	और अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें	कि ना	तुम इंसाफ़ कर सकोगे	यतीम (लड़कियों) में	तो निकाह कर लो

مَا	طَابَ	لَكُمْ	مِّنَ النِّسَآءِ	مَثْنٰى	وَثُلٰثَ	وَرُبٰعَ ۚ
जो	पसंद आऐं	तुम्हें	औरतों में से	दो-दो	या तीन-तीन	या चार-चार

فَاِنْ	خِفْتُمْ	اَلَّا	تَعْدِلُوْا	فَوَاحِدَةً	اَوْ	مَا مَلَكَتْ	اَيْمَانُكُمْ ؕ
फिर अगर	डरो तुम	कि ना	तुम अदल करोगे	तो एक ही से	या	जिनके मालिक हुए	दाऐं हाथ तुम्हारे

ذٰلِكَ	اَدْنٰٓى	اَلَّا	تَعُوْلُوْا ③ ؕ	وَاٰتُوا	النِّسَآءَ	صَدُقٰتِهِنَّ
ये	ज़्यादा क़रीब है	कि ना	तुम ना इंसाफ़ी करो	और दो	औरतों को	महर उनके

نِحْلَةً ؕ	فَاِنْ	طِبْنَ	لَكُمْ	عَنْ شَيْءٍ	مِّنْهُ	نَفْسًا
ख़ुशदिली से	फिर अगर	वो ख़ुशी से देदें	तुम्हें	कोइ चीज़	उसमें से	ख़ुद

اَمْوَالَكُمُ	السُّفَهَآءَ	تُؤْتُوا	وَلَا	مَّرِيْٓـًٔا ④	هَنِيْٓـًٔا	فَكُلُوْهُ
माल अपने	नादानों को	तुम दो	और ना	ख़ुश गवार (समझ कर)	ख़ुश मज़ा	तो खाओ उसे

فِيْهَا	وَّارْزُقُوْهُمْ	قِيٰمًا	لَكُمْ	اللّٰهُ	جَعَلَ	الَّتِيْ
उसमें से	और रिज़्क़ दो उन्हें	क़याम (का ज़रिया)	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने	बनाया	वो जो

وَابْتَلُوا	مَّعْرُوْفًا ⑤	قَوْلًا	لَهُمْ	وَقُوْلُوْا	وَاكْسُوْهُمْ
और आज़माते रहो	भली/अच्छी	बात	उन्हें	और कहो	और पहनाओ उन्हें

مِّنْهُمْ	اٰنَسْتُمْ	فَاِنْ	النِّكَاحَ ج	بَلَغُوا	اِذَا	حَتّٰٓى	الْيَتٰمٰى
उनमें	पाओ तुम	फिर अगर	निकाह (की उम्र को)	वो पहुंच जाएं	जब	यहां तक कि	यतीमों को

اِسْرَافًا	تَاْكُلُوْهَآ	وَلَا	اَمْوَالَهُمْ ج	اِلَيْهِمْ	فَادْفَعُوْٓا	رُشْدًا
इसराफ़ करते हुए	तुम खाओ उन्हें	और ना	माल उनके	उन्हें	तो दे दो	समझ बूझ

فَلْيَسْتَعْفِفْ ج	غَنِيًّا	كَانَ	وَمَنْ	يَّكْبَرُوْا ط	اَنْ	وَّبِدَارًا
पस चाहिए के वो बचे	ग़नी	हो	और जो कोई	वो बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी करते हुए

دَفَعْتُمْ	فَاِذَا	بِالْمَعْرُوْفِ ط	فَلْيَاْكُلْ	فَقِيْرًا	كَانَ	وَمَنْ
दे दो तुम	फिर जब	भले तरीक़े से	पस चाहिए के वो खाए	मोहताज	हो	और जो कोई

حَسِيْبًا ⑥	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى	عَلَيْهِمْ ط	فَاَشْهِدُوْا	اَمْوَالَهُمْ	اِلَيْهِمْ
ख़ूब हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी है	उन पर	तो गवाह बना लो	माल उनके	उन्हें

وَالْاَقْرَبُوْنَ ص	الْوَالِدٰنِ	تَرَكَ	مِّمَّا	نَصِيْبٌ	لِلرِّجَالِ
और क़राबतदार	वालिदैन	छोड़ जाएं	उसमें से जो	एक हिस्सा है	मर्दों के लिए

وَالْاَقْرَبُوْنَ	الْوَالِدٰنِ	تَرَكَ	مِّمَّا	نَصِيْبٌ	وَلِلنِّسَآءِ
और क़राबतदार	वालिदैन	छोड़ जाएं	उसमें से जो	एक हिस्सा है	और औरतों के लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِمَّا	قَلَّ	مِنْهُ	اَوْ	كَثُرَ ؕ	نَصِيْبًا	مَّفْرُوْضًا ⑦
उसमें से जो	क़लील हो	उस (माल) में से	या	कसीर/ज़्यादा हो	हिस्सा है	फ़र्ज़ किया गया

وَاِذَا	حَضَرَ	الْقِسْمَةَ	اُولُوا الْقُرْبٰى	وَالْيَتٰمٰى	وَالْمَسٰكِيْنُ
और जब	हाज़िर/मौजूद हों	तक़्सीम के वक़्त	क़राबतदार	और यतीम	और मसाकीन

فَارْزُقُوْهُمْ	مِّنْهُ	وَقُوْلُوْا	لَهُمْ	قَوْلًا	مَّعْرُوْفًا ⑧	وَلْيَخْشَ
तो तुम दो उन्हें	उस (माल) में से	और कहो	उन से	बात	भली	और चाहिए के डरें

الَّذِيْنَ	لَوْ	تَرَكُوْا	مِنْ خَلْفِهِمْ	ذُرِّيَّةً	ضِعٰفًا	خَافُوْا
वो जो	अगर	वो छोड़ जाऐं	अपने पीछे से	औलाद	कमज़ोर	वो ख़ौफ़ खाऐं

عَلَيْهِمْ ص	فَلْيَتَّقُوا	اللّٰهَ	وَلْيَقُوْلُوْا	قَوْلًا	سَدِيْدًا ⑨	اِنَّ	الَّذِيْنَ
उन पर	पस चाहिए कि डरें	अल्लाह से	और चाहिए कि कहें	बात	दुरुस्त	बेशक	वो जो

يَاْكُلُوْنَ	اَمْوَالَ	الْيَتٰمٰى	ظُلْمًا	اِنَّمَا	يَاْكُلُوْنَ	فِيْ بُطُوْنِهِمْ
खाते हैं	माल	यतीमों के	ज़ुल्म करते हुए	बेशक	वो खाते हैं	अपने पेटों में

نَارًا ؕ	وَسَيَصْلَوْنَ	سَعِيْرًا ع ⑩	يُوْصِيْكُمُ	اللّٰهُ	فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ق	ع 1 10 12
आग	और अनक़रीब वो जलेंगे	भड़कती हुई आग में	ताकीद करता है तुम्हें	अल्लाह	तुम्हारी औलाद के बारे में	

لِلذَّكَرِ	مِثْلُ	حَظِّ	الْاُنْثَيَيْنِ ج	فَاِنْ	كُنَّ	نِسَآءً	فَوْقَ
मर्द के लिए	मानिंद	हिस्सा है	दो औरतों के	फिर अगर	हों वो	औरतें	ऊपर

اثْنَتَيْنِ	فَلَهُنَّ	ثُلُثَا	مَا	تَرَكَ ج	وَاِنْ	كَانَتْ
दो से	तो उनके लिए	दो तिहाई	जो	उस (मय्यत) ने छोड़ा	और अगर	हो वो

وَاحِدَةً	فَلَهَا	النِّصْفُ ؕ	وَلِاَبَوَيْهِ	لِكُلِّ	وَاحِدٍ	مِّنْهُمَا
एक(औरत)	तो उसके लिए	आधा है	और उसके मां-बाप के लिए	वास्ते हर	एक के	उन दोनों में से

السُّدُسُ	مِمَّا	تَرَكَ	اِنْ	كَانَ	لَهٗ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	لَّمْ
छठा हिस्सा है	उस में से जो	उसने छोड़ा	अगर	है	उसके लिए	कोई औलाद	फिर अगर	नहीं

يَكُنْ	لَّهٗ	وَلَدٌ	وَّوَرِثَهٗٓ	اَبَوٰهُ	فَلِاُمِّهِ	الثُّلُثُ ۚ
है	उसके लिए	कोई औलाद	और वारिस हों उसके	मां-बाप उसके	तो उसकी मां के लिए	तीसरा हिस्सा है

فَاِنْ	كَانَ	لَهٗٓ	اِخْوَةٌ	فَلِاُمِّهِ	السُّدُسُ	مِنْۢ بَعْدِ
फिर अगर	हों	उसके	बहन भाई	तो उसकी मां के लिए	छठा हिस्सा है	बाद

وَصِيَّةٍ	يُّوْصٖى	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ؕ	اٰبَآؤُكُمْ	وَاَبْنَآؤُكُمْ
वसीयत पूरी करने के	वो वसीयत कर जाए	उसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	बाप तुम्हारे	और बेटे तुम्हारे

لَا تَدْرُوْنَ	اَيُّهُمْ	اَقْرَبُ	لَكُمْ	نَفْعًا ؕ	فَرِيْضَةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ
नहीं तुम जानते	उन में से कौन	ज़्यादा क़रीब है	तुम्हारे लिए	नफ़ा में	फ़रीज़ा है	अल्लाह की तरफ़ से

اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ⑪	وَلَكُمْ	نِصْفُ	مَا	تَرَكَ
बेशक	अल्लाह	है	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	और तुम्हारे लिए	आधा है	जो	छोड़ा

اَزْوَاجُكُمْ	اِنْ	لَّمْ	يَكُنْ	لَّهُنَّ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	كَانَ	لَهُنَّ
तुम्हारी बीवियों ने	अगर	ना	हो	उनके लिए	कोई औलाद	फिर अगर	है	उनके लिए

وَلَدٌ	فَلَكُمُ	الرُّبُعُ	مِمَّا	تَرَكْنَ	مِنْۢ بَعْدِ	وَصِيَّةٍ
कोई औलाद	तो तुम्हारे लिए है	चौथा हिस्सा	उस में से जो	वो छोड़ जाऐं	बाद	वसीयत के

يُّوْصِيْنَ	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ؕ	وَلَهُنَّ	الرُّبُعُ	مِمَّا
वो औरतें वसीयत कर जाऐं	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	और उन औरतों के लिए है	चौथा हिस्सा	उसमें से जो

تَرَكْتُمْ	اِنْ	لَّمْ	يَكُنْ	لَّكُمْ	وَلَدٌ ۚ	فَاِنْ	كَانَ	لَكُمْ
छोड़ा तुमने	अगर	नहीं	है	तुम्हारे लिए	कोई औलाद	फिर अगर	है	तुम्हारे लिए

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَدٌ	فَلَهُنَّ	الثُّمُنُ	مِمَّا	تَرَكْتُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	وَصِيَّةٍ
कोई औलाद	तो उनके लिए है	आठवां हिस्सा	उसमें से जो	छोड़ा तुमने	बाद	वसीयत के

تُوْصُوْنَ	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ؕ	وَاِنْ	كَانَ	رَجُلٌ	يُّوْرَثُ
तुम वसीयत कर जाओ	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)	और अगर	है	कोई मर्द	(जिसकी)मीरास ली जा रही है

كَلٰلَةً	اَوِ	امْرَاَةٌ	وَّلَهٗٓ	اَخٌ	اَوْ	اُخْتٌ	فَلِكُلِّ	وَاحِدٍ
कलाला	या	कोई औरत	और उसके लिए हो	एक भाई	या	एक बहन	तो वास्ते हर	एक के

مِّنْهُمَا	السُّدُسُ ۚ	فَاِنْ	كَانُوْٓا	اَكْثَرَ	مِنْ ذٰلِكَ	فَهُمْ	شُرَكَآءُ
उन दोनों में से	छठा हिस्सा है	फिर अगर	हों वो	ज़्यादा	उस से	तो वो	शरीक हैं

فِي الثُّلُثِ	مِنْۢ بَعْدِ	وَصِيَّةٍ	يُّوْصٰى	بِهَآ	اَوْ	دَيْنٍ ۙ
एक तिहाई में	बाद	वसीयत के	वसीयत की जाए	जिसकी	या	क़र्ज़ (की अदायगी के बाद)

غَيْرَ	مُضَآرٍّ ۚ	وَصِيَّةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَلِيْمٌ ﴿12﴾ ؕ
ना	नुक़्सान पहुंचाने वाला हो	वसीयत है	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	बहुत बुर्दबार है

تِلْكَ	حُدُوْدُ	اللّٰهِ ؕ	وَمَنْ	يُّطِعِ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	يُدْخِلْهُ
ये	हुदूद हैं	अल्लाह की	और जो कोई	इताअत करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	वो दाख़िल करेगा उसे

جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	وَذٰلِكَ
बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और ये है

الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ﴿13﴾	وَمَنْ	يَّعْصِ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	وَيَتَعَدَّ
कामयाबी	बहुत बड़ी	और जो कोई	नाफ़रमानी करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	और वो तजावुज़ करेगा

حُدُوْدَهٗ	يُدْخِلْهُ	نَارًا	خَالِدًا	فِيْهَا ۪	وَلَهٗ	عَذَابٌ
उसकी हुदूद से	वो दाख़िल करेगा उसे	आग में	हमेशा रहने वाला है	उसमें	और उसके लिए	अज़ाब है

ع 2 4 13

مِنْ نِّسَآئِكُمْ	الْفَاحِشَةَ	يَأْتِيْنَ	وَالّٰتِيْ	مُّهِيْنٌ ﴿14﴾ ع
तुम्हारी औरतों में से	बेहयाई को	आएं	और वो औरतें जो	ज़लील करने वाला

شَهِدُوْا	فَاِنْ	مِّنْكُمْ ج	اَرْبَعَةً	عَلَيْهِنَّ	فَاسْتَشْهِدُوْا
वो गवाही दे दें	फिर अगर	तुममें से	चार	उन पर	तो गवाह मांगो

اَوْ	الْمَوْتُ	يَتَوَفّٰهُنَّ	حَتّٰى	فِي الْبُيُوْتِ	فَاَمْسِكُوْهُنَّ
या	मौत	फ़ौत कर दे उन्हें	यहां तक के	घरों में	तो रोक लो उन्हें

مِنْكُمْ	يَاْتِيٰنِهَا	وَالَّذٰنِ	سَبِيْلًا ﴿15﴾	لَهُنَّ	اللّٰهُ	يَجْعَلَ
तुममें से	आएं इस (बुराई)को	और वो दो (मर्द)जो	कोई रास्ता	उनके लिए	अल्लाह	बना दे

اِنَّ	عَنْهُمَا ط	فَاَعْرِضُوْا	وَاَصْلَحَا	تَابَا	فَاِنْ	فَاٰذُوْهُمَا ج
बेशक	उन दोनों से	तो ऐराज़ करो	और इस्लाह कर लें	वो दोनों तौबा कर लें	फिर अगर	तो अज़ीयत दो उन दोनों को

عَلَى اللّٰهِ	التَّوْبَةُ	اِنَّمَا	رَّحِيْمًا ﴿16﴾	تَوَّابًا	كَانَ	اللّٰهَ
अल्लाह के ज़िम्मे है	तौबा (क़ुबूल करना)	बेशक	निहायत रहम करने वाला	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	है	अल्लाह

مِنْ قَرِيْبٍ	يَتُوْبُوْنَ	ثُمَّ	بِجَهَالَةٍ	السُّوْٓءَ	يَعْمَلُوْنَ	لِلَّذِيْنَ
क़रीब से	वो तौबा कर लेते हैं	फिर	जहालत से	बुरा	अमल करते हैं	उनके लिए जो

حَكِيْمًا ﴿17﴾	عَلِيْمًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	عَلَيْهِمْ ط	اللّٰهُ	يَتُوْبُ	فَاُولٰٓئِكَ
बहुत हिक्मत वाला	बहुत इल्म वाला	अल्लाह	और है	उन पर	अल्लाह	मेहरबान होता है	तो यही वो लोग हैं

اِذَا	حَتّٰٓى	السَّيِّاٰتِ ج	يَعْمَلُوْنَ	لِلَّذِيْنَ	التَّوْبَةُ	وَلَيْسَتِ
जब	यहां तक कि	बुरे	अमल करते हैं	उनके लिए जो	तौबा	और नहीं है

وَلَا	الْئٰنَ	تُبْتُ	اِنِّيْ	قَالَ	الْمَوْتُ	اَحَدَهُمُ	حَضَرَ
और ना	अब	तौबा की मैं ने	बेशक मैं	वो कहता है	मौत	उनमें से किसी एक को	आती है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	يَمُوْتُوْنَ	وَهُمْ	كُفَّارٌ ط	اُولٰٓئِكَ	اَعْتَدْنَا	لَهُمْ
उनके लिए जो	मर जाते हैं	इस हाल में कि वो	काफ़िर हैं	यही लोग हैं	तैयार कर रखा है हमने	उनके लिए

عَذَابًا	اَلِيْمًا ⑱	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا يَحِلُّ	لَكُمْ	اَنْ
अज़ाब	दर्दनाक	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	नहीं हलाल	तुम्हारे लिए	कि

تَرِثُوا	النِّسَآءَ	كَرْهًا ط	وَلَا	تَعْضُلُوْهُنَّ	لِتَذْهَبُوْا	بِبَعْضِ
तुम वारिस बन जाओ	औरतों के	ज़बरदस्ती	और ना	तुम रोको उन्हें	ताकि तुम ले जाओ	बाज़

مَآ	اٰتَيْتُمُوْهُنَّ	اِلَّآ	اَنْ	يَّاْتِيْنَ	بِفَاحِشَةٍ	مُّبَيِّنَةٍ ج
जो	दिया तुमने उन्हें	मगर	ये कि	वो आऐं	बेहयाई को	खुली-खुली

وَعَاشِرُوْهُنَّ	بِالْمَعْرُوْفِ ج	فَاِنْ	كَرِهْتُمُوْهُنَّ	فَعَسٰٓى	اَنْ
और गुज़र-बसर करो उनके साथ	भले तरीक़े से	फिर अगर	तुम नापसंद करो उन्हें	तो हो सकता है	कि

تَكْرَهُوْا	شَيْـًٔا	وَّيَجْعَلَ	اللّٰهُ	فِيْهِ	خَيْرًا	كَثِيْرًا ⑲	وَاِنْ
तुम नापसंद करो	एक चीज़ को	और कर दे	अल्लाह	उसमें	भलाई	बहुत सी	और अगर

اَرَدْتُّمُ	اسْتِبْدَالَ	زَوْجٍ	مَّكَانَ	زَوْجٍ لا	وَّاٰتَيْتُمْ	اِحْدٰىهُنَّ
इरादा करो तुम	बदलने का	एक बीवी को	जगह	(दूसरी) बीवी के	और दे दिया हो तुमने	उनमें से किसी एक को

قِنْطَارًا	فَلَا	تَاْخُذُوْا	مِنْهُ	شَيْـًٔا ط	اَتَاْخُذُوْنَهٗ	بُهْتَانًا
ढेरों माल	तो ना	तुम लो	उसमें से	कुछ भी	क्या तुम लोगे उसे	बोहतान लगा कर

وَّاِثْمًا	مُّبِيْنًا ⑳	وَكَيْفَ	تَاْخُذُوْنَهٗ	وَقَدْ	اَفْضٰى	بَعْضُكُمْ
और गुनाह	खुले से	और किस तरह	तुम ले सकते हो उसे	हालांकि तहक़ीक़	पहुंच चुका	बाज़ तुम्हारा

اِلٰى بَعْضٍ	وَّاَخَذْنَ	مِنْكُمْ	مِّيْثَاقًا	غَلِيْظًا ㉑	وَلَا	تَنْكِحُوْا
तरफ़ बाज़ के	और वो ले चुकीं	तुम से	मीसाक़	पुख़्ता	और ना	तुम निकाह करो

ع 3 8 14

مَا	نَكَحَ	اٰبَآؤُكُمْ	مِّنَ النِّسَآءِ	اِلَّا	مَا	قَدْ	سَلَفَ ؕ	اِنَّهٗ
जिनसे	निकाह कर चुके	बाप तुम्हारे	औरतों में से	मगर	जो	तहक़ीक़	गुज़र चुका	बेशक वो

كَانَ	فَاحِشَةً	وَّمَقْتًا ؕ	وَسَآءَ	سَبِيْلًا ﴿22﴾ ع	حُرِّمَتْ	عَلَيْكُمْ
है वो	बेहयाई का काम	और क़ाबिले नफ़रत	और बहुत ही बुरा	रास्ता	हराम कर दी गईं	तुम पर

اُمَّهٰتُكُمْ	وَبَنٰتُكُمْ	وَاَخَوٰتُكُمْ	وَعَمّٰتُكُمْ	وَخٰلٰتُكُمْ	وَبَنٰتُ
मांऐं तुम्हारी	और बेटियां तुम्हारी	और बहनें तुम्हारी	और फुफियां तुम्हारी	और ख़ालाऐं तुम्हारी	और बेटियां

الْاَخِ	وَبَنٰتُ	الْاُخْتِ	وَاُمَّهٰتُكُمُ	الّٰتِيْٓ	اَرْضَعْنَكُمْ	وَاَخَوٰتُكُمْ
भाई की	और बेटियां	बहन की	और मांऐं तुम्हारी	जिन्होंने	दूध पिलाया तुम्हें	और बहनें तुम्हारी

مِّنَ الرَّضَاعَةِ	وَاُمَّهٰتُ	نِسَآئِكُمْ	وَرَبَآئِبُكُمُ	الّٰتِيْ
रज़ाअत से	और मांऐं	तुम्हारी बीवियों की	और बेटियां तुम्हारी बीवियों की	वो जो

فِيْ حُجُوْرِكُمْ	مِّنْ نِّسَآئِكُمُ	الّٰتِيْ	دَخَلْتُمْ	بِهِنَّ ز	فَاِنْ	لَّمْ
तुम्हारी गोदों में हैं	तुम्हारी बीवियों में से	वो जो	दख़ूल किया तुमने	उनसे	फिर अगर	ना

تَكُوْنُوْا	دَخَلْتُمْ	بِهِنَّ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ ز	وَحَلَآئِلُ	اَبْنَآئِكُمُ
हो तुम	दुख़ूल कर चुके तुम	उनसे	तो नहीं	कोई गुनाह	तुम पर	और बीवियां	तुम्हारे बेटों की

الَّذِيْنَ	مِنْ اَصْلَابِكُمْ لا	وَاَنْ	تَجْمَعُوْا	بَيْنَ	الْاُخْتَيْنِ	اِلَّا
वो जो	तुम्हारी पुश्तों से हैं	और ये कि	तुम जमा करो	दर्मियान	दो बहनों के	मगर

مَا	قَدْ	سَلَفَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿23﴾ لا
जो	तहक़ीक़	गुज़र चुका	बेशक	अल्लाह	है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION